डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

20 मार्च 2018

केदारनाथ सिंह के निधन पर साहित्य अकादेमी के सचिव (के.श्रीनिवासराव) का शोक संदेश

हिंदी के वरिष्ठ कवि, समालोचक और चिंतक केदारनाथ सिंह के निधन (19 मार्च 2018) से भारतीय भाषाओं के साहित्य को अपूरणीय क्षति हुई है। मुख्यतः एक कवि के तौर पर पिछले लगभग सात दशकों से सक्रिय केदार जी ने कविता के अलावा कई प्रमुख साहित्यिक विधाओं में भी पर्याप्त लेखन किया। हिंदी ही नहीं बल्कि भारतीय भाषाओं के शिखर पुरुष केदारनाथ सिंह ऐसे रचनाकार रहे हैं जिन्होंने हिंदी की कई पीढ़ियों को सार्थक रूप से प्रभावित किया। जनपदीय चेतना में रची–बसी भाषा की ऐंद्रिकता, अर्थध्वनि, मूर्त्तता, गूँज और सार्वजनीन व्याप्ति केदार जी की कविता का मुख्य गुण हैं। उनकी कविताओं की सहजता उस विडम्बनापूर्ण सरलता का उदाहरण है जो वस्तुओं और कृत्यों में छिपे जीवन–मर्म को भेदकर देखने की अनोखी हिकमत कही जा सकती है। भाषा के सार्थक और सशक्त उपयोग की संभावना खोजने और चरितार्थ करने की कोशिश केदार जी की कविता की अपनी पृथक और अलग पहचान बनाती है। मनुष्यता की प्रतिष्ठा और संरक्षा उनकी रचनात्मकता का प्रमुख स्वर रहा है।

केदार जी का जन्म 1934 में चकिया, जिला बलिया, उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनकी आरंभिक शिक्षा गाँव में और वाराणसी में हाईस्कूल से एम.ए. तक की पढ़ाई हुई। विधिवत् काव्यलेखन 1952–53 के आसपास शुरू हुआ जो उनके जीवनकाल के अंतिम कविता–संग्रह *सृष्टि पर पहरा* तक निर्बाध जारी रहा। उन्होंने उदय प्रताप कालेज वाराणसी, सेंट एन्ड्रूज कालेज गोरखपुर, उदित नारायण कालेज पडरौना और गोरखपुर विश्वविद्यालय के बाद 1976 से जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में अपनी सेवाएँ दीं। *अभी बिल्कुल अभी, ज़मीन पक रही है, यहाँ से देखो, अकाल में सारस, बाघ, उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ, तालस्ताय और साइकिल, सृष्टि पर पहरा* आदि केदारनाथ सिंह के कुछ प्रमुख कविता–संग्रह हैं। *कल्पना और छायावाद, आधुनिक हिंदी कविता में बिम्ब विधान* आदि आपकी कुछ महत्त्वपूर्ण आलोचना पुस्तकें हैं। उन्होंने कई महत्त्वपूर्ण पत्रिकाओं का संपादन भी किया था।

केदारनाथ सिंह को *अकाल में सारस* (कविता–संग्रह) के लिए 1989 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार तथा वर्ष 2010 में साहित्य अकादेमी के सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता से भी विभूषित किया गया था। इसके अतिरिक्त उन्हें अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों और पुरस्कारों से नवाज़ा गया, जिनमें प्रमुख हैं – कुमारन आशान पुरस्कार, सोवियतलैंड नेहरू अवार्ड, व्यास सम्मान, ज्ञानपीठ पुरस्कार, जोशुआ साहित्य पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, भारत भारती सम्मान, दिनकर पुरस्कार आदि।

अपनी नवोन्मेषी रचनात्मकता के नाते वे भारतीय साहित्य के अविस्मरणीय धरोहर बने रहेंगे। साहित्य अकादेमी को उनका सदा सक्रिय सहयोग और मार्गदर्शन प्राप्त था। साहित्य अकादेमी के सभी सदस्य कवि केदारनाथ सिंह के निधन से मर्माहत हैं और दिवंगत आत्मा की शांति की कामना करते हैं।

(के. श्रीनिवासराव)

डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

सा. अ. 16 / 14

20 मार्च 2018

श्रद्धांजलि सभा

साहित्य अकादेमी ने अपने कर्मचारियों के मध्य आज प्रख्यात कवि, चिंतक, विद्वान तथा साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य डॉ. केदारनाथ सिंह को श्रद्धांजलि देने के लिए एक सभा का आयोजन किया। डॉ. केदारनाथ सिंह का निधन 19 मार्च 2018 को हो गया था। सभा की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने एक श्रेष्ठ व्यक्ति के रूप में उनके साथ अपने लंबे सहयोग को याद किया और श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आज हमने एक श्रेष्ठ कवि ही नहीं बल्कि एक अच्छे इंसान को भी खो दिया है, जो हम सबके मित्र थे। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने शोक संदेश पढ़ा और कहा कि उनके जाने से साहित्य अकादेमी ने अपने पाँच दशक पुराने सच्चे मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक को खो दिया है। इसके बाद उनकी स्मृति में एक मिनट का मौन रखा गया। साहित्य अकादेमी के सभी कार्यालय आज उनके सम्मान में बंद रहेंगे।

के. श्रीनिवासराव
सचिव,साहित्य अकादेमी

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in